UGC Approved Journal
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 11 | October – December 2017

प्राचीन भारत मे नारी शिक्षा : एक अध्ययन

डॉ0 हिमांशु पण्डित
असिस्टैण्ट प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

भारतीय संस्कृति मे स्त्रियों को सदैव से ही अत्यन्त सम्मान जनक एवं प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे उन्हें पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। ऋग्वेद मे तो स्त्रियों को सुभगे कहा गया है अर्थात् ''सौभाग्यशालिनी''। यह महत्त्वपूर्ण है कि विश्व की अनेकों प्राचीन संस्कृतियों मे स्त्रियों की स्थिति पर दृष्टिपात करने से प्रायः निराशा ही हाथ लगती है। जबकि इस संदर्भ मे हम जब भी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता मे जितने प्राचीन स्तर पर जाते हैं तो स्त्रियों की सामाजिक दशा को उतना ही श्रेष्ठ पाते हैं। यहाँ तो गृह का अस्तित्व ही स्त्री के अस्तित्व मे निहित माना जाता था।(1)

भारतीय संस्कृति मे स्त्रियों को अपना मनोकूल आत्मविकास और उत्थान करने का पूरा अधिकार प्राप्त था। उन्हें विवाह, शिक्षा आदि समस्त क्षेत्रों मे पुरुषसम अधिकार प्राप्त थे। कन्या, भगिनी, भार्या, माता प्रत्येक रुप मे वे समाज के सम्मान एवं श्रद्धा का केन्द्र होती थी। धर्मशास्त्रों मे नारी सर्वशक्ति सम्पन्न मानी गई है तथा विद्या, शील, ममता, यश एवं सम्पत्ति की प्रतीक समझी गयी है।

वैदिक युग मे स्त्री की शिक्षा अपनी उच्चतम सीमा पर थी। उन्हें पुरुषों के समकक्ष बिना भेद–भाव के शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। ज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र मे वे अग्रणी थीं एवं किसी भी दृष्टि से पुरुषों से कम नहीं थीं। सत्य यह है कि यह काल स्त्रियों के मान–सम्मान, विद्वता एवं ज्ञान की दृष्टि से भारतीय समाज का गौरवपूर्ण एवं स्वर्णिम काल रहा है। वैदिक साहित्य के अवलोकन से ज्ञात होता है कि इस समय पुत्रों की भाँति पुत्रियों का भी विद्यारम्भ से पूर्व उपनयन संस्कार किया जाता था। साथ ही साथ बिना किसी भेद–भाव के ब्रह्मचर्य पालन करती हुई वे भी गुरुकुलों मे रहकर शिक्षा ग्रहण करती थीं तथा उच्चतम आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान प्राप्त किया करतीं थीं। पुरुषों की भाँति वे भी यज्ञादि समस्त कार्यों मे स्वच्छन्दतापूर्वक भाग लेतीं थीं। दर्शन, तर्कशास्त्र आदि अनेक विषयों का वे अध्ययन करतीं थीं। संगोष्ठियों मे वेद की ऋचाओं का गान तो करतीं ही थीं साथ–साथ अनेक ऐसी विदुषी स्त्रियों के दृष्टान्त भी हमे सहज ही मिलते हैं जिन्होने स्वयं ऋग्वेद की ऋचाओं के प्रणयन मे भी योगदान दिया। इसमे रोमशा, अपाला, उर्वशी, लोपामुद्रा, घोषाकाक्षीवती, निवावरी, विश्ववारा, इंद्राणी आदि ऐसी बीस विदुषियों के नाम विशेष प्रसिद्ध हैं।(2) ये स्त्रियाँ अपने पति के साथ समान रुप से यज्ञ किया करतीं थीं।(3) ऋग्वेद मे भी पुत्री का विवाह विद्वान पति से ही करने की बात कही गई है।(4) यजुर्वेद मे कहा गया है कि कन्या का विवाह ब्रह्मचर्यावस्था समाप्त करने के पश्चात् ही करना चाहिए।(5) अथर्ववेद मे भी स्पष्ट रुप से कहा गया है कि विवाहोपरान्त वही स्त्री सफल है जिसने ब्रह्मचर्यावस्था मे अपनी शिक्षा–दीक्षा ठीक प्रकार से पूर्ण की हो।(6) यज्ञ एवं धार्मिक अनुष्ठानो के इस काल मे जबकि पति को पत्नि के साथ ही यज्ञ करना होता था(7) ऐसे मे भी स्त्रियों को निष्णात वेदज्ञ होना आवश्यक हो गया था ताकि वे समस्त धार्मिक क्रियाएँ उचित रीति से सम्पादित कर सकें।

उपनिषदों मे वर्णित मैत्रेयी, गार्गी नामक स्त्रियाँ दर्शन, तत्त्वज्ञान एवं तर्क मे निपुण होतीं थीं। याज्ञवल्क्य की पत्नि मैत्रेयी अत्यन्त विदुषी एवं ब्रह्मवादिनी महिला थीं जिन्होने सांसारिक सुखों को त्याज्य माना एवं अपने जीवन को आध्यात्मिक चिन्तन की ओर समर्पित किया।(8) महाकवि भवभूति के अनुसार मैत्रेयी ने शास्त्रों की शिक्षा महर्षि वाल्मिकी से प्राप्त की थी। गार्गी ने अपनी विलक्षण प्रतिभा, अद्भुत तर्कशक्ति, मेधा और सूक्ष्म चिन्तन के अचूक बाणो की बौछार से विदेहराज जनक की राजसभा मे याज्ञवल्क्य जैसे प्रकाण्ड विद्वान को परास्त कर अपनी विद्वता की ध्वजा स्थापित की थी।(9) उपनिषदों मे तो कुछ ऐसी विशिष्ट क्रियाओं का ज्ञान भी मिलता है जो विदुषी कन्याओं को पुत्री के रुप मे प्राप्त करने के लिए की जाती थीं।(10)

सूत्र साहित्य का अनुशीलन भी स्त्री शिक्षा को पुष्ट करता है। यद्यपि सूत्र साहित्य स्त्री शिक्षा की विस्तृत जानकारी तो अप्राप्य है किन्तु यत्र–तत्र प्राप्त उद्धरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस समय तक भी स्त्रियाँ उपनयन की अधिकारिणी थीं एवं उच्चकोटि का ज्ञान प्राप्त करतीं थीं। काठक गृह्यसूत्र मे कन्या के लिए ब्रह्मचर्य की अवधि 10 से 12 वर्ष बताई गई है।(11) आश्वलायन गृह्यसूत्र भी स्त्रियों के समावर्तन की बात कह कर उनके वेदाध्ययन के अधिकार को पुष्ट करता है।(12) तद्नुसार समावर्तन के समय हाथों मे उबटन लगाकर ब्राह्मण अपने मुख को, क्षत्रिय भुजाओं को, वैश्य उदर को, स्त्री अपने गर्भस्थान को तथा सरणजीवी अपनी जंघाओं को लिप्त करे। हारीत के अनुसार भी रजोदर्शन से पूर्व स्त्रियों का समावर्तन

संस्कार होता है।[13] गोभिल तथा काठक गृह्यसूत्र से पता चलता है कि वधुएँ सुशिक्षित होतीं थीं क्योंकि विवाह संस्कार के समय उन्हे मन्त्रों का उच्चारण करना पड़ता था।[14] साथ ही गोभिल तो कन्याओं द्वारा यज्ञोपवीत धारण करने का स्पष्ट उल्लेख करते हैं।[15] पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार अग्रहायण विधि के स्रस्तरारोहण संस्कार मे पत्नी को अनेक वैदिक मन्त्रों का पाठ करना पड़ता था।[16] मानव एवं वाराह गृह्यसूत्र मे वर–वधु की योग्यताओं मे शिक्षा को दोनो के लिए समान रुप से महत्त्वपूर्ण बताया गया है।[17] स्पष्ट है कि इस समय तक कन्या की शिक्षा पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता था।

वैदिक शिक्षा के साथ–साथ स्त्रियों को अन्य अनेक कलाओं की शिक्षा भी दी जाती थी। काठक गृह्यसूत्र मे स्त्रियों द्वारा नाड़ी, मृदंग, पणव आदि वाद्ययंत्रों के वादन किए जाने के उल्लेख स्त्रियों की संगीत शिक्षा की ओर संकेत करते हैं।[18] मानव[19], शांखायन[20] आदि गृह्यसूत्रों से भी स्त्रियों के संगीत–नृत्य आदि विधाओं मे निष्णात होने की सूचना प्राप्त होती है। हारीत के अनुसार तत्कालीन समाज मे दो प्रकार की स्त्रियाँ होती थीं। प्रथम सद्योवधु जो विवाहपूर्व ब्रह्मचर्य जीवन मे विद्याध्ययन करते हुए यज्ञों के मन्त्र, संगीत–नृत्यादि सीखकर विवाहोपरान्त गृहस्थ्य जीवन मे प्रवेश करतीं थीं। द्वितीय ब्रह्मवादिनी कहलाती थीं जो गृहस्थ्य जीवन का परित्याग कर अनुशासन के साथ आजीवन विद्याध्ययन एवं अनवरत तपस्या करती थीं।[21] पाणिनी के अनुसार स्त्रियाँ मीमांसा एवं व्याकरण जैसे जटिल विषय भी पढ़ती थीं। आपिशाली आचार्य के व्याकरण का अध्ययन करने वाली आपिशला तथा काशकृत्स्नि आचार्य की मीमांसा का अध्ययन करने वाली स्त्रियाँ काशकृत्स्ना कहलाती थीं।[22] स्पष्ट है कि इस काल मे भी स्त्रियाँ पुरुषों की ही भाँति विद्याध्ययन के लिए गुरुकुलों मे ब्रह्मचर्य जीवन का पालन किया करतीं थीं।

महाकाव्यों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि स्त्रियों की शिक्षा का पूरा ध्यान रखा जाता था। रामायण मे राम के युवराज पद पर अभिषेक के समय कौशल्या[23] द्वारा तथा बाली के युद्ध मे प्रस्थान से पूर्व तारा द्वारा यज्ञ करने का उल्लेख मिलता है।[24] इसका सीधा अर्थ यह है कि महाकाव्य काल तक भी स्त्रियाँ वेदज्ञ होतीं थीं। सीता के द्वारा भी प्रतिदिन वैदिक सूक्तों के द्वारा संध्या वंदन का उल्लेख प्राप्त होता है।[25] महाभारत से पता चलता है कि कुन्ती अथर्ववेद मे[26] तो गांधारी अर्थशास्त्र मे[27] पारंगत थीं। द्रौपदी नीतिशास्त्र[28] की जानकार थी तो दमयन्ती, विदुला और सत्यवती राजनीतिशास्त्र[29] मे निष्णात थीं। महाभारत मे ही द्रौपदी एवं अरुन्धती को पण्डिता एवं ब्रह्मवादिनी कहा गया है।[30] स्त्रियों को इतिहास एवं पुराण की शिक्षा भी दी जाती थी।[31] क्षत्राणियों को तो शस्त्र विद्या भी सिखाई जाती थी जिसका उदाहरण है कैकेयी। इसके अतिरिक्त उन्हें संगीत, वाद्य, नृत्यादि ललित कलाओं मे भी पारंगत किया जाता था। विराट ने अपनी पुत्री उत्तरा को अर्जुन के द्वारा नृत्य की शिक्षा दिलवायी थी।[32] शुक्र ने भी अपनी पुत्री देवयानी को संगीत–नृत्य आदि मे निपुण किया था।[33] ऋषि कुशध्वज की कन्या वेदवती भी ब्रह्मवादिनी थी।[34]

जैन एवं बौद्ध साहित्य से भी स्त्रियों के सुशिक्षित होने के उल्लेख मिलते हैं। इस युग मे भी स्त्री शिक्षा का स्तर पर्याप्त उच्च था। बौद्ध संघ मे स्त्री प्रवेश की अनुमति के उपरान्त तो इस दिशा मे एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ।.धर्म–दर्शन मे वे विशेष पारंगत होतीं थीं। थेरीगाथा मे 32 आजीवन ब्रह्मचारिणियों का तथा 18 विवाहोपरान्त दीक्षित हुईं थेरियों का उल्लेख मिलता है। शुभा, सुमेधा, अनोपमा वे उच्चकुल की स्त्रियाँ थीं जिनसे विवाह करने के लिए राजकुमार भी उत्सुक रहते थे, किन्तु वे थेरियाँ बनीं।[35] खेमा, सुभद्रा, अमरा, उदुम्बरा, भद्रकुण्डलकेशा, चन्दना, सुक्का, जयन्ती, धम्मदिन्ना आदि विशेष प्रसिद्ध विदुषी स्त्रियाँ थीं। इनमे से कुछेक विशेष उल्लेखनीय हैं। खेमा तत्कालीन उच्च शिक्षित नारी थीं। विनय मे पारंगत खेमा की विद्वता, बुद्धिमत्ता, प्रतिभा की प्रशंसा सुनकर कौशल नरेश प्रसेनजीत ने स्वयं जाकर उनसे दार्शनिक विषयों पर विचार–विमर्श किया।[36] संयुक्त निकाय से ज्ञात होता है कि सुक्का वाग्मिता मे प्रवीण थीं। धम्मदिन्ना धम्म मे पारंगत थीं। जयन्ती ने स्वयं महावीर से तर्क किया और बाद मे जैन धर्म मे दीक्षित हुईं।[37] चंदना ने सांसारिक भोग विलास त्यागकर जैन धर्म ग्रहण किया और महावीर के समय मे जैन स्त्री संघ की अध्यक्षा बनीं। भद्रकुण्डलकेशा पहले जैन थीं किन्तु बाद मे सारिपुत्र के सम्पर्क मे आकर उसने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया।[38] संघमित्रा, अंजलि, उत्तरा, काली, सुपत्ता, चन्ना, पटच्चरा, उपाली, रेवती आदि विनय मे पारंगत स्त्रियाँ थीं जो कुशलता से अध्ययन भी करतीं थीं। ललित कलाओं की शिक्षा भी ग्रहण करतीं थीं। राजा रुद्रायन की पत्नी चन्द्रप्रभा प्रसिद्ध नृत्यांगना थीं।[39]

स्त्रियाँ अध्ययन के साथ–साथ अध्यापन भी किया करतीं थीं। ऐसी स्त्रियों को पाणिनी आचार्या एवं उपाध्याया कहते हैं।[40] वे महिला विद्यालय(छात्रीशाला) का उल्लेख भी करते हैं।[41] आपस्तम्ब भी स्त्री आचार्यों का उल्लेख करते हैं।[42] बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार भी स्त्री अध्यापिकाएँ होतीं थीं।[43] अवदानशतक मे पद्मावती नामक उपाध्यायिका का उल्लेख मिलता है।[44] पतंजलि कहते हैं कि इनसे पुरुष छात्र भी पढ़ते थे जैसे औदमेध्या आचार्य के शिष्य औदमेध कहलाते थे।[45] अमरकोष मे भी

महिला शिक्षिकाओं के उल्लेख मिलते हैं।[46] शांखायन गृह्यसूत्र मे गार्गी, वाचक्नवी, वडवा, सुलभा, प्रातिथेयी तथा मैत्रेयी आदि स्त्रियों के शिक्षिका होने का उल्लेख मिलता है।[47]

स्पष्ट है कि वैदिक काल से लेकर प्रथम शताब्दी ईस्वी तक स्त्रियाँ न सिर्फ सुशिक्षित होतीं थीं अपितु वे विषय विशेषज्ञ भी होती थीं। वे पुरुषों के साथ समभाव एवं समान अधिकार से अध्ययन–अध्यापन दोनो किया करतीं थीं। किन्तु अब वह समय आ गया था कि जब स्त्री–शिक्षा मे ह्रास प्रकट होने लगा था। उनकी दशा मे युगानुरुप परिवर्तन भी होते रहे। उनकी स्थिति मे वैदिक युग से लेकर पूर्वमध्ययुग तक अनेक उतार–चढ़ाव आते रहे तथा उनके अधिकारों मे तद्नुरुप परिवर्तन भी होते रहे। यह सत्य है कि वैदिक युग मे उनकी अवस्था अत्यन्त उन्नत एवं परिष्कृत थी। किन्तु परवर्ती काल से उनकी स्थिति मे परिवर्तन प्रारम्भ हो गया जो अवनति के रुप मे बाद मे भी जारी रहा। कुछ राजनीतिक अस्थिरता एवं सामाजिक संकीर्णता के चलते उन्हे पुरुषों के अपेक्षाकृत निम्न स्थान प्राप्त हुआ। शिक्षा के क्षेत्र मे भी कमोवेश यही स्थिति बनी रही। परिवर्तन इस सीमा तक हुआ कि जो स्त्री कभी मंत्र–दृष्टा होती थी उसके लिए अब गृहस्थी ही विद्या का केन्द्र बनकर रह गयी थी। स्त्रियों के लिए उपनयन संस्कार वर्जित कर दिया कर गया था। मनु तो यहाँ तक कहते हैं कि पति ही कन्या का आचार्य, विवाह ही उसका उपनयन, पति निवास ही उसका गुरुकुल तथा गृहकार्य ही उसका अग्निहोत्र है।[48] बालिकाओं के उपनयन मे वैदिक मंत्र–पाठ वर्जित हो गए थे।[49] यम के अनुसार शिक्षण संसथाओं मे जाना कन्या के लिए अतीत की बात हो गई थी। वह केवल घर पर ही पिता, भाई आदि से ही शिक्षा प्राप्त कर सकती थी।[50] वैदिक मंत्रों का ज्ञान न रह जाने के कारण कालान्तर मे स्त्रियों के लिए यज्ञ मे सम्मिलित होना भी वर्जित हो गया था। परवर्ती भाष्यकारों मेधातिथि, विश्वरुप, अपरार्क ने भी यही व्यवस्था पुनः पुष्ट कर दी थी। संभवतः यही कारण है कि नालन्दा, विक्रमशिला जैसे विश्वप्रसिद्ध विश्वविद्यालयों मे सहत्रों छात्रों के मध्य एक भी छात्रा का उल्लेख नही मिलता।

परन्तु अभिजात वर्गों मे स्त्री–शिक्षा अब भी ध्यान दिया जा रहा था। यद्यपि वैदिक शिक्षा से तो वो दूर हो चली थीं किन्तु साहित्य एवं ललित कलाओं की शिक्षा उन्हें अब भी दी जा रही थी। ये स्त्रियाँ प्राकृत एवं संस्कृत मे दक्ष होती थीं। काव्य, संगीत, नृत्य, वाद्य, चित्रकला मे वो प्रवीण होती थीं।[51] राज्यश्री के लिए बाण ने लिखा है कि वह नृत्यगीत इत्यादि मे निष्णात होती जा रही थी।[52] हाल की गाथा सप्तशती से अनेक विदुषी स्त्रियों का पता चलता है। रेखा, रोहा, माधवी, अनुलक्ष्मी, पहाई, बद्धवाही एवं शशीप्रभा वे सात कवियित्रियाँ थीं जिनका उल्लेख गाथा सप्तशती मे विशेष प्रतिभा एवं कल्पनाशक्ति के लिए हुआ था।[53] इस युग अनेक प्रज्ञा सम्पन्न नारियाँ हुईं जिन्होने अपनी उत्कृष्ट रचना शैली एवं काव्य कला से अभूतपूर्व साहित्यिक योगदान दिया। राजशेखर के नाटकों से पता चलता है कि राजदासियाँ संस्कृत और प्राकृत मे सुन्दर एवं मनोहारी श्लोकों की रचना कर सकतीं थीं। स्वयं राजशेखर की पत्नी अवन्तिसुन्दरी संस्कृत मे पारंगत थी तथा उत्कृष्ट कवियित्री एवं टीकाकार थीं।[54] वाचस्पति मिश्र की पत्नी भामती धार्मिक एवं दार्शनिक विषयों मे रुचि रखती थीं।[55]

पुराणों मे भी अनेक ऐसी स्त्रियों के उल्लेख मिलते हैं जो ब्रह्मवादिनी थीं। इनमे अपर्णा, एकपर्णा, एकपाटला, मेधा, धारिणी, संनति, शतरुपा आदि के नाम विशेष हैं। शीलभट्टारिका, देवी, इन्दुलेखा, सुनन्दा, मल्लामोरिका, तिरुमलांबा, विज्जिका, शीला, सुभद्रा, मारुला, भवदेवी, पट्भक्षी, लक्ष्मी, प्रियंवदा, वैजयन्ती, कमला, गंगादेवी, त्रिवेणी, विकटनितंम्बा, विजयांका, आदि वे विदुषी महिलाएँ थीं जिनके उल्लेख संस्कृत ग्रन्थों मे मिलते हैं।[56] स्त्रियों को अन्य ललितकलाओं की शिक्षा भी दी जाती थी। वात्स्यायन के अनुसार कन्याओं को पुस्तकवाचन, काव्य, पुराण, प्रहेलिका, नृत्य–संगीत, चित्रकला आदि चौसठ कलाओं की शिक्षा दी जाती थी।[57] उपमितिभवप्रपंचकथा से भी कन्याओं के ललितकलाओं मे निपुण होने की जानकारी मिलती है।[58] मण्डनमिश्र की पत्नी भारती इतनी विदुषी थी कि मण्डनमिश्र और शंकारचार्य के मध्य हुए शास्त्रार्थ की वही निर्णायक बनी थीं। बारहवी शताब्दी के गणितज्ञ भास्कर द्वितीय ने अपनी पुत्री को गणित पढ़ाने के लिए उसी के नाम पर लीलावती नामक गणित की पुस्तक लिखी थी।

राजपरिवार की कन्याओं को तो प्रशासनिक एवं सैनिक शिक्षा भी दी जाती थी। ऐसी महिलाओं के उल्लेख भी हमे मिलते हैं जिन्होने आवश्यकता पड़ने पर कुशल प्रशासनिक क्षमता का परिचय दिया। सातवाहन राजवंशी नागानिका तथा वाकाटकवंशी प्रभावती गुप्ता ने अपने पति की मृत्यु के पश्चात् अपने अल्पव्यस्क पुत्रों की संरक्षिका बनकर कुशलतापूर्वक शासन संचालन किया। चालुक्य वंशी विजयभट्टारिका, अक्कादेवी, मैलादेवी, ककुमदेवी तथा लक्ष्मीदेवी आदि स्त्रियों ने भी कुशल प्रशासन किया।[59] कश्मीर मे भी दिद्दा, सुगन्धा, सूर्यमति, रत्नादेवी ने भी शासन संचालन किया तथा सेना का नेतृत्व भी किया।[60]

परन्तु इन समस्त तथ्यों के उपरान्त भी यह महत्त्वपूर्ण है कि उपरोक्त समस्त शिक्षित स्त्रियाँ मात्र राजपरिवारों एवं अभिजात्य वर्गों से ही थीं। सामान्य जन–जीवन मे स्त्री शिक्षा प्रायः इतिहास की बात बन चुकि थी। संभवतः इसका एक महत्त्वपूर्ण कारण वाह्य आक्रमण भी था। वाह्य आक्रमणो के चलते जब स्त्री के कौमार्य पर संकट आया तब उनका घर से बाहर निकलना बन्द कर दिया गया और शनैः शनैः घर के भीतर ही महिलाएँ बन्द हो गईं साथ ही घर मे भी अवगुण्ठन की प्रथा प्रारम्भ हुई। इस समय जब विधर्मी भारतीय महिलाओं के साथ सहमति अथवा बलात् विवाह कर रहे थे तब वैदिक ज्ञान की शुचिता एवं पवित्रता अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए तत्कालीन चिंतकों ने स्त्रियों को वैदिक ज्ञान से विलग कर दिया।

सम्वेत् रुप मे यही कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति के प्रारम्भ मे तो स्त्री प्रत्येक प्रकार से उच्च प्रतिष्ठित थी किन्तु कालान्तर मे वाह्य आक्रमण एवं संकरता आदि के चलते उनकी स्थिति मे गिरावट प्रकट हुई।

*****

संदर्भ

1. ऋग्वेद, 3/53/4, गृहणी गृहमुच्यते।
2. वही, 1/126/7, 1/179, 5/28,
3. वही, 8/31, यादम्पति सुमनसा आ च धावतः। देवा सो नित्यथा शिरा।
4. वही, 3/5/65,
5. यजुर्वेद, 8/1, उपयाम गृहीतोस्यादित्येभ्यस्त्वा।
विष्णउरुगायैष सोमस्त रक्षस्व मा त्वा दमन्।।
6. अथर्ववेद, 1/5/18, ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।
7. शतपथ ब्राह्मण, 5/1/6/10, अयज्ञियों वा एष योपत्नीकः।
8. बृहदारण्यकोपनिषद्, 3/4/3,
9. वही, 3/6/8,
10. वही, 6/4/17, अथ या इच्छेत – दुहिता मे पण्डिता जायते
सर्वमायुरियदिति तिलौदनं पाचयित्वा
सर्पिष्मन्तमश्नीयातामीश्वरौ जनयितवै।
11. काठक गृह्यसूत्र, 19/2–3, दषवार्षिकं ब्रह्मचर्यं कुमारीणां द्वादषवार्षिकं वा.....।
12. आश्वलायन गृह्यसूत्र, 3/8/11, अनुलेपेन पाणी प्रलिप्य मुखमग्रे ब्राह्मणोनुलिम्पेद्। बाहू राजन्य। उदरं वैश्य। उपस्थं स्त्र्यूरु सरणजीविनः।
13. हारीत, वीरमित्रोदय, भाग1, पृष्ठ 404, प्राग्रजसः समावर्त्तनमितिहारीतोक्त्या।
14. गोभिल गृह्यसूत्र, 2/1/19–22, काठक गृह्यसूत्र, 25/23,
15. गोभिल गृह्यसूत्र, 2/1/19, प्रावृतां यज्ञोपवीतिनीमभ्युदानयन् जपेत् सोमोदद्दगन्धर्वायेति।
16. पारस्कर गृह्यसूत्र, 3/2/6–8,
17. मानव गृह्यसूत्र, 10/5, वाराह गृह्यसूत्र, 10/5, पच्चविवाहकारकाणि भवन्ति पित्तं रुपं विद्या प्रज्ञा बान्धवइति।
18. काठक गृह्यसूत्र, 17/9,
19. मानव गृह्यसूत्र, 1/9/29, प्राकूस्विष्टकृतष्चतस्रो अविधवानन्दी रुपवादयन्ति।
20. शांखायन गृह्यसूत्र, 1/11/5, चतस्रोष्टौ वाविधवाः शाकपिण्डीभिः सुरयान्नेव च तर्पयित्वा चतुरानर्तनं कुर्युः।
21. हारीत, वीरमित्रोदय, भाग1, पृष्ठ 404, द्विविधाः स्त्रियो ब्रह्मवादिन्यः सद्योवध्वष्च।
22. वा0 श0 अग्रवाल, पाणिनी कालीन भारतवर्ष, पृ 103, आपिशलमधीते ब्राह्मणी आपशाला ब्राह्मणी। काशकृत्सिना प्रोक्तं मीमांसा काशकृत्सनी। काशकृत्स्नीमधीते काशकृत्स्ना ब्राह्मणी अत्र प्राप्तनोति।
23. रामायण, 2/20/15, साक्षौमवसना हृष्टा नित्यं व्रत परायण।
अग्निं जुहोतिस्य तदा मन्त्रविद् कृतमंगला।।
24. वही, 4/16/12, ततः स्वस्त्ययनं कृत्वा मंत्रविद्विजथैषिणी।
25. वही, 5/15/48, सन्ध्याकालमनाः श्यामा ध्रुवमेष्यति जानकी।
नदी चेमां शुभजलां सन्ध्यार्थं वरवर्णिनी।।

26. महाभारत, 3/305/20,
27. वही, 1/57/94,
28. वही, 3/33/57–58,
29. वही, 3/57/11, 5/130/5,
30. वही, 4/1/3,
31. वही, 13/5/2,
32. वही, 4/11/8,
33. वही, 1/71/28,
34. रामायण, 7/17, कुशध्वजो नाम पिता ब्रह्मर्पिरतिमतप्रभः।
बृहस्पति सुतः श्रीमान् बद्धया तुल्यो बृहस्पते।।
35. हॉर्नर, विमेन अंडर प्रिमिटिव बुद्धिज़्म, द्वितीय अध्याय,
36. संयुक्त निकाय, 12/20,
37. भगवतीसूत्र, 3/257,
38. जातक संख्या, 542,
39. रुद्रायणावदान, पृ0 470,
40. अष्टाध्यायी, 4/1/57,
41. वही, 6/2/86, छात्र्यादयः शालायाम्।
42. आपस्तम्ब धर्मसूत्र, 1/7/21/9,
43. महावस्तु, 2/225/2,
44. अवदान शतक, 2/51/7,
45. महाभाष्य, 4/1/47, औदमेध्यायाश्छात्रा औदमेधाः।
46. अमरकोष, 2/6/14,
47. शांखायन गृह्यसूत्र, 4/10/3, वाचक्नवी वडवा प्रातिथेयी/सुलभा/मैत्रेयी/ये चान्ये आचार्यास्ते सर्वो तृप्यंत्विति।
48. मनुस्मृति, 2/67, वैवाहिको निधिः स्त्रीणां संस्कारो वैदिको मतः।
पतिसेवा गुरौर्वासौ गृहार्थोग्नि परिक्रिया।।
49. वही, 2/56,
50. संस्कार प्रकाश, पृ0 402–403,
51. काव्यमीमांसा, 10/53,
52. हर्षचरित, 4/230,
53. गाथासप्तशती, 1/86, 3/28,
54. कर्पूरमंजरी, 1/11,
55. राजबलि पाण्डेय, हिन्दी साहित्य का वृहत्त इतिहास, पृ0 146,
56. कृष्णमाचारी, हिस्ट्री ऑफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर, पृ0 391–97,
57. कामसूत्र, 1/3/16,
58. उपमितिभवप्रपंचकथा, पृ0 345,
59. एपिग्राफिया इण्डिका, 9/274,
60. राजतरंगिणी, 7/905,

***